28 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सत्यता के आधार द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा ज्योति बिंदु सितारा हूं...

➳ _ ➳ मस्तक सिंहासन पर विराजमान हूं...

→ मेरी दिव्य ज्योति जगी हुई है...

→ परमात्म सम्मुख बैठी हूं...

→ मैं शुद्ध हूं, सत्य स्वरूप, अनादि, अविनाशी, सत चित्त, आनन्द स्वरूप हूं...

→ ये मुझ आत्मा का ओरिजनल स्वरूप है, जो अब संगम पर परमात्मा ने मुझे दिखाया है...

■ बहुत जन्मों की भटकन के बाद मुझे अपना खोया रूप दिखा है...

➳ _ ➳ जन्म जन्म इसकी खोज मैं करती रही हूं...

→ द्वापर से माया रावण के संग से मैं अपना सच्चा स्वरूप खो चुकी थी...

→ संग के प्रभाव का रंग मुझ पर लग गया था...

→ अब परमात्मा ने मुझे मेरे रूहानी रूप रंग से परिचित कराया है...

→ ये मेरा डायमंड समान चमकदार दिव्य स्वरूप है...

■ इतना सुंदर रुपहला रूप बिल्कुल अपने पिता समान...

➢➢ अब वापस इस सतोप्रधान स्वरूप को पाना ही मेरा लक्ष्य है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी असलियत को पहचान चुकी हूं...

→ अपना कनेक्शन सुप्रीम पिता के संग जोड़ माया का रंग छुटा रही हूं...

→ परमात्मा से निरंतर गुण और शक्तियों को ले भरपूर होती जा रही हूं...

→ मेरी आत्मा श्याम से सुंदर होती जा रही है...

→ अपने तमोगुणी संस्कारों पर निर्भयता से विजय प्राप्त करती जा रही हूं...

→ मैं आत्मा सच्चाई, सफाई से भरपूर होती जा रही हूं...

■ मुझ आत्मा का ओरिजनल, सतोप्रधान स्वरूप वापिस आता जा रहा है...

■ मैं कौन हूं, मैं किसकी हूं, मेरा कौन है, मैं कहाँ से आई हूं, मुझे कहाँ जाना है, मुझे क्या करना है अब ये स्पष्ट हो गया है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा हूं, परमात्मा की हूं, परमधाम की रहवासी हूं, वहां से ही आयी हूं, वापस अपने घर जाना है...

➳ _ ➳ मेरे पिता ने मुझे मुझ से परिचित कराया है, अब मुझे उनको सारे विश्व में उन समान बन प्रत्यक्ष करना है...

→ मेरी सच्चाई, सफाई, स्वच्छता,ओर निर्भयता इस प्रत्यक्षता का आधार है...

→ मेरा सतोप्रधान स्वरूप ही परमात्मा को प्रत्यक्ष करेगा...

→ मैं आत्मा अपना कर्तव्य जान उसे पूर्ण करने में लग गई हूं...

→ मैं आत्मा अब सुख, शांति, आंनद जैसे गुणों को अपने अंदर भरकर अन्य आत्माओ पर बरसा रही हूं...

→ इससे वो मेरी ओर आकर्षित होती जा रही हैं, उन्हें मेरा स्वच्छ स्वरूप सच्चाई अच्छी लग रही है, और वो भी उसको पाने को लालायित हो रही हैं...

→ मैं उनको उनकी ऑरीजनलिटी से परिचित करा उसके ओरिजनल उद्गम स्त्रोत अर्थात परमात्मा से उनका मिलन करा रही हूं...

→ प्रभु को पाकर सब उनके रंग में रंगते जा रहे है...

→ बाबा सबको आप समान बनाते जा रहे हैं...

■ बाबा से सब अपने ओरिजनल गुण और शक्तियों को ले स्वयं में धारण करते जा रहे हैं...

■ इन गुणों और शक्तियों से भरे हुए आत्मिक बॉम्ब बन गये हैं...

➢➢ ये आत्मिक बॉम्ब स्वयं के स्वच्छ जीवन द्वारा स्वयं को संसार में प्रत्यक्ष कर रहे हैं...

➳ _ ➳ राजयोग श्रेष्ठ है, राजयोगी श्रेष्ठ हैं, कर्तव्य, परिवर्तन श्रेष्ठ है...

→ अब हमें परमात्मा को पूरे विश्व में उनके सिखाये आचरण द्वारा प्रत्यक्ष करना है...

→ वो परमात्मा बॉम्ब ही पूरे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना कर सकता है...

→ स्वच्छता ओर निर्भयता धारण कर सारी आत्मायें पूरे विश्व में फैल चुकी हैं...

→ परमात्म बॉम्ब फेंका जा चुका है, परमात्म प्रत्यक्षता हो गयी है...

■ सर्व धर्म की आत्मायें उन्हें जान चुकी हैं, पहचान चुकी हैं...

■ सब का पिता एक है, ये मेरे पिता हैं, हर और से ये आवाज आ रही है...

■ सारे सहारे छोड़ सब आत्मायें अपने पिता के पास आ गयी हैं...

■ ज्ञान सूर्य सबके सामने प्रकट हो गए हैं...

■ पूरे विश्व को पता चल गया है कि ऐसा सुंदर जीवन देने वाले, बनाने वाले, सिखाने वाले ओर कोई नहीं स्वयं ऑलमाइटी ऑथारिटी हैं।